ଏକାଠି ଖେଳିବା

ଯଶଓ୍ୱିନ୍ଦର କୌର ବିନ୍ଦ୍ରା

ଅନୁବାଦ : ଅନସୂୟା ନନ୍ଦ

ଚିତ୍ରାଙ୍କନ : ସୁରେଶ ଲାଲ



୮ରୁ ୧୦ ବର୍ଷ ବୟସର ପିଲାମାନଙ୍କ ପାଇଁ

ନ୍ୟାସନାଲ ବୁକ୍ ଟ୍ରଷ୍ଟ, ଇଣ୍ଡିଆ ପୁସ୍ତକ ଓ ପଠନ ଅଭିରୁଚିର ବିକାଶ ନିମନ୍ତେ ୧୯୫୭ ମସିହାରେ ଭାରତ ସରକାର(ଉଚ୍ଚଶିକ୍ଷା ବିଭାଗ, ମାନବ ସମ୍ବଳ ବିକାଶ ମନ୍ତ୍ରଣାଳୟ)ଙ୍କ ଦ୍ୱାରା ସ୍ଥାପିତ ଏକ ସ୍ୱୟଂଶାସିତ ସଂସ୍ଥା। ଭାରତରେ ପିଲାମାନଙ୍କ ପାଇଁ ପୁସ୍ତକର ସର୍ବବୃହତ୍ ବହୁଭାଷିକ ପ୍ରକାଶକ ଭାବରେ ଟ୍ରଷ୍ଟ ବିଭିନ୍ନ ବୟସର ପିଲାମାନଙ୍କୁ ସେମାନଙ୍କ ମାତୃଭାଷା ଓ ଇଂରାଜୀରେ ପୁସ୍ତକ ଯୋଗାଇଦେବା ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟରେ ଇଂରାଜୀ ସମେତ ୩୦ରୁ ଅଧିକ ଭାରତୀୟ ଭାଷାରେ ସଚିତ୍ର ଓ ରଙ୍ଗିନ ପୁସ୍ତକ ପ୍ରକାଶ କରିଥାଏ। ଏହିସବୁ ପୁସ୍ତକ ନେହେରୁ ବାଳ ପୁସ୍ତକାଳୟ କ୍ରମରେ ପ୍ରକାଶିତ ହୁଏ।

ISBN 978-81-237-9108-1
ପ୍ରଥମ ସଂସ୍କରଣ 2020 (ଶକାବ୍ଦ 1941)

Original : Milkar Khelen (*Hindi*)
Translation : Ekathi Kheliba(*Odia*)
₹ 50.00
ନିର୍ଦ୍ଦେଶକ, ନ୍ୟାସନାଲ ବୁକ୍ ଟ୍ରଷ୍ଟ, ଇଣ୍ଡିଆ
ନେହେରୁ ଭବନ, 5, ଇନ୍‌ଷ୍ଟିଚ୍ୟୁସନାଲ ଏରିଆ, ଫେଜ୍- II
ବସନ୍ତକୁଞ୍ଜ, ନୂଆ ଦିଲ୍ଲୀ - 110070 କର୍ତ୍ତୃକ ପ୍ରକାଶିତ
Website : www.nbtindia.gov.in

नेहरू बाल पुस्तकालय

मिलकर खेलें

जसविन्दर कौर बिन्द्रा

चित्र

सुरेश लाल



nbt.india
एकः सूते सकलम्
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

स्नेहा अपने घर के आँगन में अकेली बैठी थी। वह बहुत उदास थी। उसकी मम्मी कुछ दिनों से बीमार चल रही थी। आज उसके पापा उसकी मम्मी को अस्पताल लेकर गए थे।

तभी गली में आवाज सुनाई दी, ''खिलौनेवाला, खिलौने ले लो. . . खिलौने।''

स्नेहा आवाज सुनकर चौंक गई। वह एकदम से उठी और घर के मुख्य द्वार की ओर भागी। वह कुछ सोच कर रुकी परंतु फिर आगे बढ़ गई।





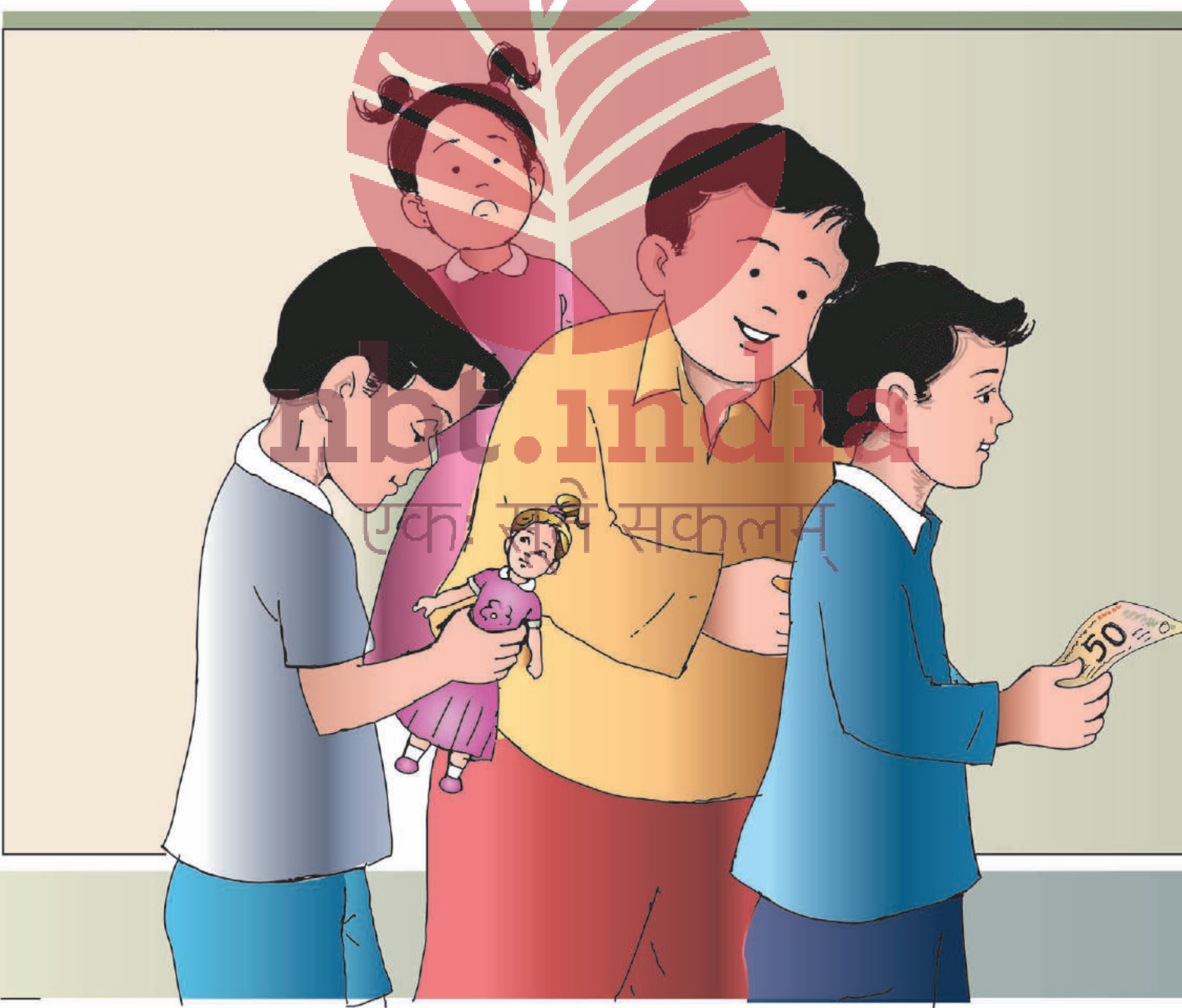
खिलौनेवाले की आवाज लगातार आ रही थी।

"ये भालू देखो. . .नाचता बंदर देखो। आओ, आओ जल्दी आओ. . .।"

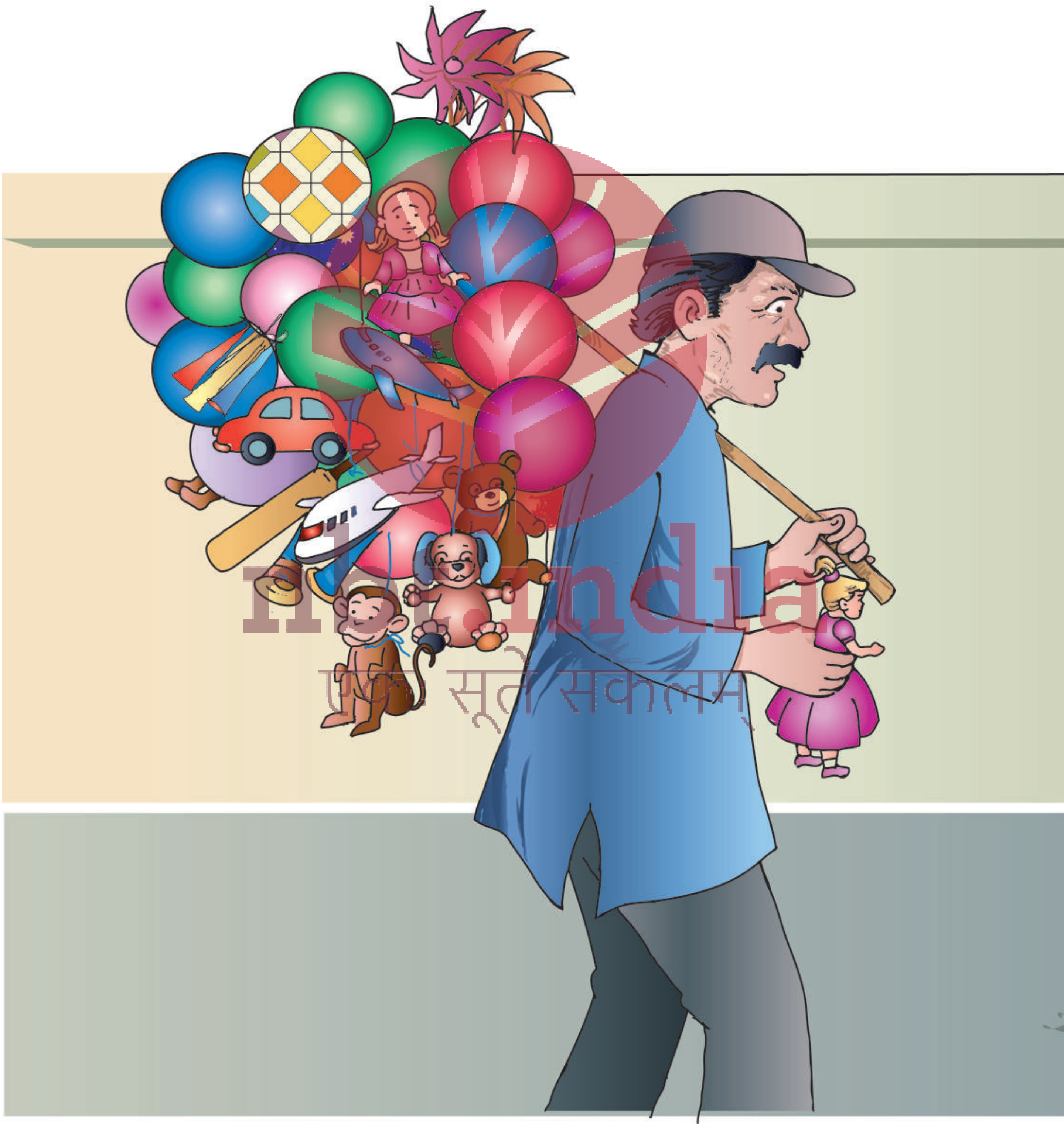
स्नेहा ने दरवाजे से बाहर झाँका। उसके अगल-बगल के घरों से कई बच्चे बाहर निकल आए थे। वह अपने घर के दरवाजे की ओट में खड़ी रही। आज उसके मम्मी-पापा घर में नहीं थे। वह खिलौने लेने के लिए किसी और से कह भी नहीं सकती थी। वह उदास मन से काफी देर तक वहीं खड़ी रही। तभी खिलौनेवाला उसके घर के सामने आकर खड़ा हो गया। उसने दरवाजे की ओट से देखा, बहुत सारे बच्चे खिलौनेवाले को घेर कर खड़े हुए थे।



मनोज ने आते ही घूमने वाली एक सुंदर गुड़िया पसंद कर ली। निखिल ने चाबी वाला भालू ले लिया, जो चाबी घुमाते ही झपटता था। अभिषेक ने नाचने वाला बंदर ले लिया। रोहित को भोंपू बहुत पसंद आया, जिसे दबाने से भों-भों की ध्वनि निकलती थी। दीप्ति ने चरखा पसंद किया। वह चरखा उसे बहुत अच्छा लगा। एक-एक कर सभी बच्चों ने पैसे देकर अपनी पसंद के खिलौने ले लिए। उन सभी को खिलौने खरीदते हुए देख, स्नेहा भी उनके पास जाकर खड़ी हो गई।







“तुम क्या ले रही हो स्नेहा?” अभिषेक ने अपने बंदर को नचाते हुए उससे पूछा।

“मैं. . .मैं. . .।” स्नेहा कुछ बोल न पाई।

“स्नेहा, तुम यह दुल्हन ले लो।” रवीना ने सुझाया।

“इसे तो दूल्हा लेना चाहिए। भैया, क्या तुम्हारे पास दूल्हा नहीं है?” निखिल ने हँसते हुए कहा। वह उन सभी बच्चों से थोड़ा बड़ा था।

निखिल की बात सुनकर वहाँ खड़े सभी बच्चे खिलखिलाकर हँस पड़े।

स्नेहा हँस न सकी। वह बिना कुछ कहे चुपचाप, अपने घर की ओर बढ़ने लगी।

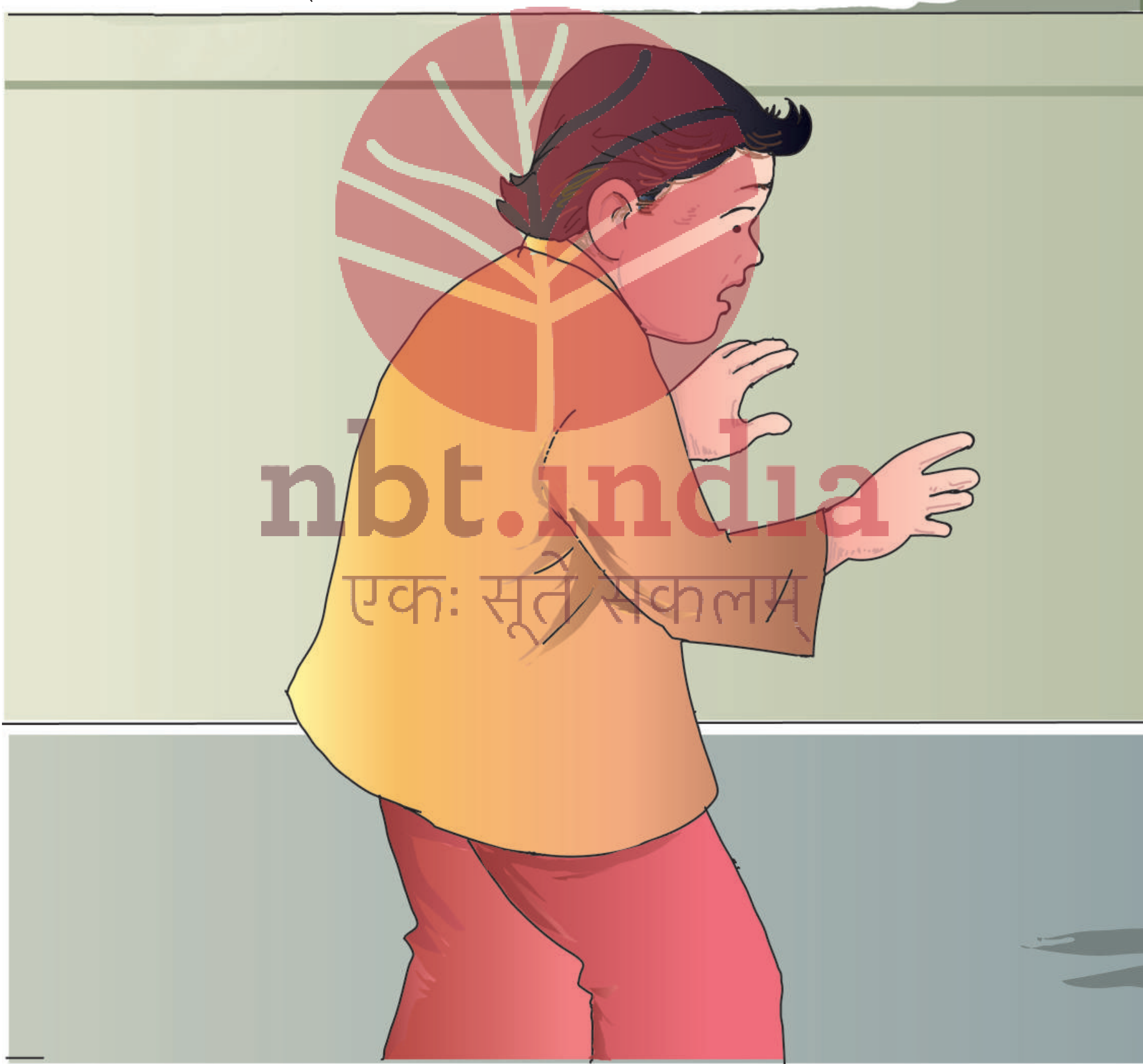


“मैं तो मजाक कर रहा था। तुम तो बुरा मान गईं. . .स्नेहा. . .।” यह कहते हुए निखिल उसे मनाने दौड़ा।

“नहीं, मैंने बुरा नहीं माना।” स्नेहा ने रुक कर जबरदस्ती हँसने की कोशिश की।

“फिर तुम खिलौने क्यों नहीं ले रही हो? चलो तुम्हें जो भी खिलौना पसंद है, वही ले लो।” मनोज ने पास आकर कहा।

“नहीं, मेरे मम्मी-पापा आज घर पर नहीं हैं और मेरे पास पैसे भी नहीं हैं।” स्नेहा रुआँसी हो आई।







खिलौनेवाला अभी भी आवाजें लगा रहा था। कुछ बच्चों के माता-पिता अपने बच्चों को खिलौने लेकर दे रहे थे।

स्नेहा अपने आँगन में जाकर अनमनी-सी बैठ गई। इस समय उसे अपनी मम्मी की बहुत याद आ रही थी। वह सोचने लगी 'कितना अच्छा होता, अगर यह खिलौने वाला कुछ देर पहले आया होता, तो वह बाकी बच्चों की तरह खिलौना ले लेती। पापा उसे खुद खिलौना लेकर देते। और वह भी अपने नए खिलौने के साथ खेलती। मगर अब वह करे भी तो क्या. . .?'

तभी उसके घर का दरवाजा किसी ने जोर-से धकेला।

"स्नेहा. . . स्नेहा।" उसे पुकारते हुए उसके सभी दोस्त घर में घुस आए।

"स्नेहा, चलो खेलते हैं. . .।" रोहित ने भोंपू बजाकर जैसे खेल की शुरुआत ही कर दी।

"मैं किसके साथ खेलूँ. . .?" स्नेहा रुआँसी होकर बोली।



‘‘हमारे साथ. . .। ले मेरा भालू ले ले।’’ निखिल ने अपना भालू स्नेहा की ओर बढ़ाते हुए कहा।

‘‘देख, यह कुत्ता कैसे सिर हिलाता है। देख न. . .।’’ यह कहते हुए रवीना ने उसका ध्यान अपनी ओर खींचना चाहा।

सभी में मानो होड़ लगी थी कि वह अपना खिलौना स्नेहा के हाथ में दे दें।

स्नेहा बारी-बारी से सभी के खिलौने हाथ में लेकर खेलने लगी। अब उसकी उदासी और अकेलापन दूर हो गया।







दीप्ति ने कहा, " स्नेहा, हमारे पास तो एक-एक खिलौना था। तुम्हारे पास तो ढेर-सारे खिलौने खेलने के लिए हो गए।"

"और क्या. . .?"

"भों. . .भों।" रोहित ने खुशी में जोर से भोंपू बजाया।



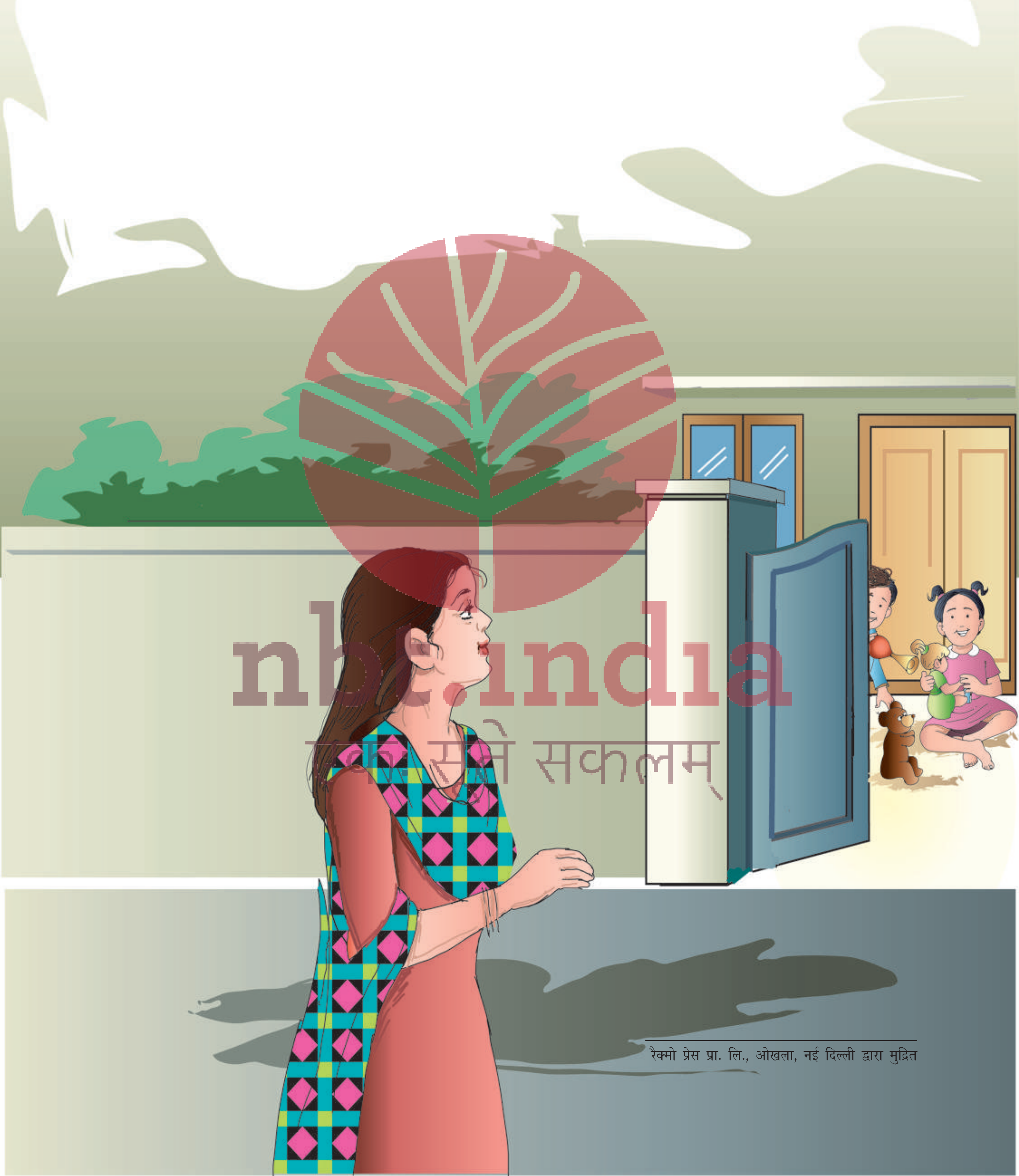


सभी बच्चों की हँसने-खेलने की आवाजें, भोंपू की आवाज में घुल-मिल गईं।

बच्चे दूर खड़ी आरती दीदी को भूल ही गए, जिसने स्नेहा को रोता हुए देख, उन्हें ये सीख दी और कहा, ''स्नेहा तुम्हारे संग खेलती है न। फिर आज उसे अकेला क्यों छोड़ रहे हो। जबकि उसकी माँ भी बीमार है। सभी जाकर उसके आँगन में खेलो। अपने खिलौने उसे दिखाओ। वह खुश हो जाएगी। तभी तो खेलने में असली मजा आएगा।''



बच्चों को खिलौनों के साथ खेलते हुए देख, वह बाहर के दरवाजे से ही मुड़ गई।



रैक्मो प्रेस प्रा. लि., ओखला, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित

9 से 11 वर्ष के बच्चों के लिए

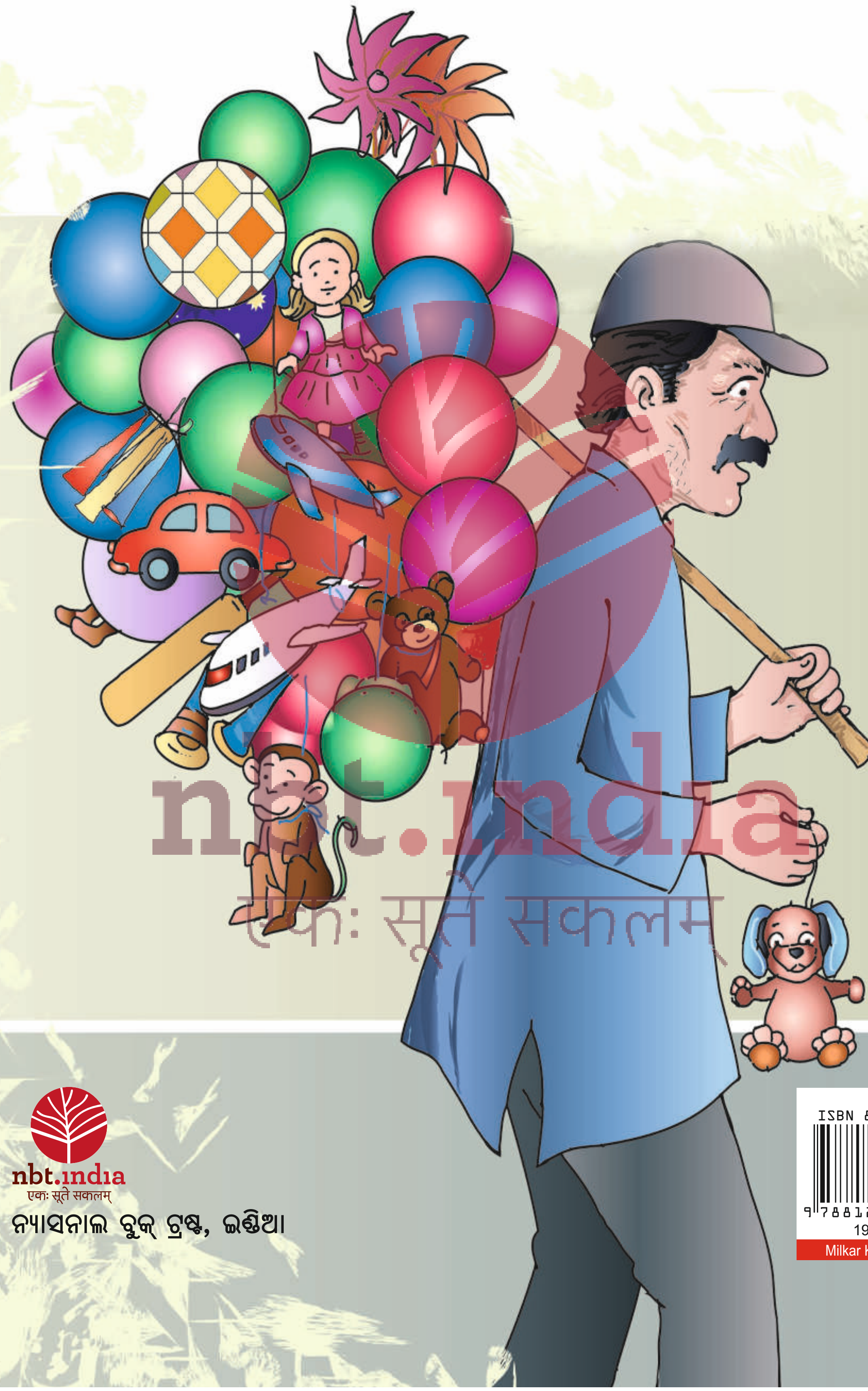
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की स्थापना पुस्तकों के प्रोन्नयन और पठन अभिरुचि के विकास के उद्देश्य से सन् 1957 में भारत सरकार (उच्चतर शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय) द्वारा की गई थी। न्यास द्वारा हिंदी, अँग्रेजी सहित 30 से अधिक भाषाओं व बोलियों में पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता है। बच्चों की पुस्तकों का प्रकाशन सदैव से संस्था की प्राथमिकता रहा है।

ISBN 978-81-237-7733-7

पहला संस्करण : 2015
दूसरी आवृत्ति : 2018 *(शक 1940)*
मूल © जसविन्दर कौर बिन्द्रा
Milkar Khelen *(Original Hindi)*

₹ 45.00

निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110 070 द्वारा प्रकाशित
www.nbtindia.gov.in



nbt.india
एकः सूते सकलम्
ନ୍ୟାସନାଲ ବୁକ୍ ଟ୍ରଷ୍ଟ, ଇଣ୍ଡିଆ

50.00
ISBN 812379108-9
9 788123 791081
19201950
Milkar Khelen (*Odia*)